भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 28/02/2020

Part-A

3 Marks

1- द लाइफ डिवाइन–

– महर्षि अरविन्दो घोष

2- आर्य समाज की स्थापना–

– दयानन्द सरस्वती, 1875।

3- तृष्णा ही दुःख का कारण है,–

– भगवान बुद्ध का कथन है।

4- कबीर के तीन ग्रंथ–

– 1. साखी

2. सबद

3. रमैनी

5- प्लेटो के अनुसार मुख्य नैतिक सद्गुण–

– प्लेटो के अनुसार मुख्य नैतिक सद्गुण न्याय हैं।

6- जैन धर्म का मुख्य सिद्धांत वाक्य–

– अहिंसा परमोधर्मा।

7- द पॉलिटिक्स के रचनाकार–

– अरस्तु

8- महात्मा गांधी के अनुसार सत्याग्रह–

– सत्याग्रह का अर्थ होता हैं– सत्य के प्रति आग्रह। अर्थात सत्य पर अहिंसक रूप से तब तक अडिग बने रहो, जब तक आपको अपने अधिकार प्राप्त न हो।

9- अस्तेय–

– अस्तेय का अर्थ– चोरी न करना। अर्थात् मन, कर्म, वचन से किसी दूसरे की वस्तु को न चुराना।

10- अध्यात्मक राष्ट्रवाद के प्रणेता–

– अरविन्दो घोष

6 Marks

A- हमे जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह अवास्तविक है, विचारों की प्रतिच्छाया है, प्लेटों के कथन की विवेचना–

– प्लेटों ने इस जगत को प्रत्यय के जगत की प्रतिछाया माना है अर्थात् तत्व मीमांसा से संबंधित इस सिद्धांत का निरूपण आपने वास्तविक ज्ञान के स्वरूप को समझने के लिए किया था।

आपके गुरू सकरात अधिकांशतः ऐसे प्रश्न पूछा करते थे कि न्याया क्या हैं? सौन्दर्य क्या हैं? साहस क्या हैं? और इन प्रश्नों के उत्तर उस समय के किसी भी दार्शनिक ने नहीं दिए। अतः प्लेटों ने इन प्रश्नों की खोज में एक ऐसे जगत की संकल्पना दी जो स जगत से भिन्न है तथा उसे समझने के लिए आपने प्रत्येक वस्तु को गुणों के आधार पर दो भागों में बांटा है–

1. स्थायी गुण 2. अस्थायी गुण।

प्लेटो ने इस जगत को अस्थायी माना है तथा प्रत्येक वस्तु को परिवर्तनशील माना है लेकिन आपका मानना था कि प्रत्येक वस्तु में एक स्थायी गुण होता है जिसे प्रत्यय कहते है। जैसे–

1. प्रत्येक मनुष्य के साथ उसके विचार सदैव अमूर्तिकरण रूप से विद्यमान रहते है।
2. प्रत्यय के कारण ही मनुष्य को इस जगत का भ्रम होता है।
3. प्रत्यय के आधार पर ही किसी वस्तु का निर्धारण होता है। जैसे– सुगन्ध से पुष्प का और साहस से वीर का।
4. प्रत्यय प्रत्येक वस्तु का संघात होती है।
5. प्रत्यय शाश्वत् होते है, तथा वस्तुएं नश्वर।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

B- नैतिक सद्गुण के संदर्भ में अरस्तु के मध्यम मार्ग–

– नैतिक सद्गुणों के स्वरूप में और उनके आचरण के सिद्धांत में अरस्तू ने एक विशेष सिद्धांत प्रतिपादित किया था जिसे मध्यम मार्ग का सिद्धांत कहा जाता है। जो मनुष्य को सन्तुलित जीवन के मार्ग की ओर अग्रसर करता है आपके अनुसार प्रत्येक सद्गुण दो अतिवादी दृष्टिकोणों के बीच को अवस्था है। जैसे–

1. संयम– अत्यधिक भोगविलास व पूर्णतः आनन्दरहित सन्यासवाद की मध्यपूर्ति अवस्था है। इसलिए संयम एक नैतिक मार्ग है।

2. इसी प्रकार साहस उदृण्डता तथा कायरता के बीच की अवस्था है।

3. इसी सिद्धांत के अनुसार अरस्तू न्याय के सन्दर्भ में कहते है कि न्याय अपने अधिकारों की अपेक्षा बहुत अधिक प्राप्त करने तथा अपने अधिकारों को पूर्णतः छोड़ देने के बीच की अवस्था है।

4. ठीक इसी प्रकार उदारता बिना सोचे समझे सब कुछ लुटा देने तथा किसी को कभी भी कुछ न देने के बीच की अवस्था हैं।

5. वहीं नम्रता के संदर्भ में कहा गया कि अत्यकिधक चापलूसी तथा अत्यधिक दुर्व्यवहार के बबीच की अवस्था है।

अतः अरस्तू के मतानुसार नैतिक सद्गुणों का जीवन में यहीं महत्व है कि वह अतिवादी दृष्टिकोणों के मध्य की स्थिति को प्रदर्शित करते है जिससे कि मनुष्य अपने जीवन को सन्तुलित व सुखी बना सकता है इसे ही मध्यम मार्ग का सिद्धांत कहा गया है।

C- गाँधी जी के रामराज्य का अर्थ

– गांधीजी अराजकतावादी विचारक थे जो कि इनके राज्य संबंधी विचारों से स्पष्ट होता है।

गांधीजी ने राम राज्य संकल्पना में राज्य के अस्तित्व को निषेध माना है जिसके लिए आपने 2 कारण बताए है–

1. राज्य में सैना व पुलिस के सहारे कानून व व्यवस्थाओं को लागू किया जाता है जो कि अहिंसा के ठीक विपरीत है।

2. राज्य अनिवार्य रूप से ऐसे कानून बनायेगा जो सभी व्यक्तियों को एक जैसे ढांचे में बांधते है, जिससे कि व्यक्तियों की स्वतंत्रता बाधित होती है।

गांधीजी अपनी इस अराजकतावाद या राज्यविहीन स्थिति तक पहुंचने के लिए अहिंसा को अपनाते है। क्योंकि आप लक्ष्यों के साथ–साथ साधन की पवित्रता पर भी बल देते थे।

लेकिन प्रश्न तो यह उठता है कि राज्य नहीं होगा तो सामाजिक व्यवस्थाएं कैसे चलेगी। इसके उत्तर में गांधीजी कहते है कि जब व्यक्ति शिक्षित होंगे, उच्च नैतिक स्तर पर चलेंगें, आर्थिक इच्छाएं संतुष्ट होगी तथा पर्याप्त विकास होगा तो अपराध होंगें ही नहीं और यदि अपराध होते भी है तो उसके लिए नैतिक दबाव ही काफी है।

गांधीजी जानते थे कि यह आदर्श इतना आसान नहीं है लेकिन उन्हें विश्वास था– कि राम राज्य आयेगा लेकिन कब और कैसे इसका दाबा नहीं करते, परन्तु जब तक नैतिक रामराज्य नहीं आता आपने कुछ राजनैतिक व्यवस्था के सूत्र दिए जो निम्न हैं–

1. राज्य की शक्तियां जितनी कम हो उतनी बेहतर है।
2. आदर्श लोकतंत्र
3. सत्ता का हस्तांतरण निम्न से उच्च स्तर की ओर हो।
4. गांधीजी लोकल्याणकारी राज्य का उत्साहपूर्वक समर्थन नहीं करते थे क्योंकि लोक कल्याण के नाम पर राज्य की शक्तियां बढ़ जायेंगी जिससे कि व्यक्तियों की स्वतंत्रता बाधित होगी।

D- कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत–

– कौटिल्य ने राज्य की तुलना मानव शरीर से की है, तथा उसके सह अवयव रूप को स्वीकार किया है आपके अनुसार राज्य के सभी तथ्य मानव शरीर के आगे के समान आत्मनिर्भर तथा मिल जुलकर कार्य करते है, इन 7 अंगो की व्याख्या निम्न. हैं–

1. स्वामी/राजा–सिर
2. जनपद/प्रजा – पैर
3. अमात्य/मंत्री/प्रशासक– आँखें
4. दुर्ग – बाहें
5. कोष – मुख
6. दण्ड/सैना– मस्तिष्क
7. मित्र – कान

राजा/स्वामी– राजा, राज्य के सिर के समान होता है

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

इसलिए राजा को कुलीन, बुद्धिमान, साहसी, धैर्यवान, संयमी, दूरदर्शी तथा युद्ध कला में निपुण होना चाहिए।

अमात्य/मंत्री/प्रशासनिक पदाधिकारी– अमात्य राज्य की आँखें होती है। कौटिल्य ने अमात्य के लिए अपने देश के नागरिकों को ही स्वीकार किया है।

जनपद/जनसंख्या एवं भूमि– जनपद को राज्य के पैर की संज्ञा दी गई है, जिस पर राज्य का अस्तित्व टिका हुआ होता है प्रजा को स्वामी भक्त, परिश्रमी तथा राजा की आज्ञा का पालन करने वाली होना चाहिए।

दुर्ग/किला– कौटिल्य ने दुर्ग को राज्य की बाहें माना है जो प्रत्येक स्थिति में राज्य की सुरक्षा करते है इसलिए राजा को ऐसे दुर्गों का निर्माण करना चाहिए, जो युद्ध हेतु एवं रक्षात्मक दृष्टि से लाभकारी है।

कोष– कोष राज्य के मुख के समान होता है इसलिए कोष को राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है और वित्त को ही प्रशासन का हृदय माना गया है।

दण्ड/सेना– यह राज्य का मस्तिष्क है। शत्रु तथा प्रजा पर नियंत्रण हेतु सैना अत्यधिक आवश्यक तत्व है।

मित्र– यह राज्य के कान के समान होता है जो शांति व युद्धकाल में राज्य की समस्त जानकारी, गुप्त सूचनाएं तथा दूसरे देश की नीतियों के बारे में राजा को सूचित करते है।

E- एकात्मक मानवतावाद–

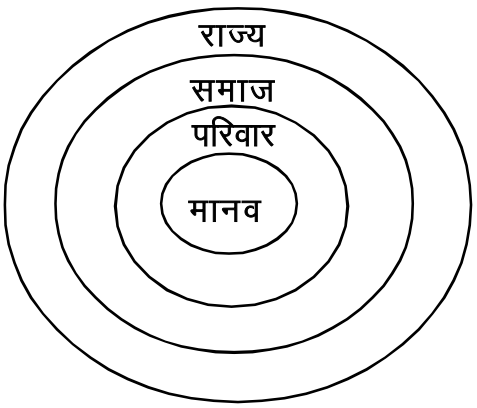

एकात्मक मानवतावाद ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार, मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केन्द्र में मनुष्य उससे जुड़ा परिवार इसी प्रकार अनन्त ब्रम्हाण को अपने में समाहित किए हुए है जिसमें प्रत्येक कारक का विकास कृमिक रूप से होता है जो अस्तित्व कायम रखते है।

प. दीनदयाल जी ने एकात्मक मानवतावाद पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि राज्य में समय–समय पर भिन्न–भिन्न संस्थाएं जन्म लेती है तथा मनुष्य प्रत्येक संस्था का अंग होता है जैसे– कुटुम्ब का मैं अंग हूँ, समाज का मैं अंग हूँ। इसी प्रकार प्रकृति का मैं अंग हूँ, कि व्यक्ति नाम की जो वस्तु है वह इस चराचर जगत से एकात्म संबंधित है जिसके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता इसलिए मनुष्य को पूर्ण सुख व वैभव की प्राप्ति हेतु शरीर के 4 गुण–

1. शरीर 2. मन 3. बुद्धि 4. आत्मा।

के बीच स्वस्थ संबंध स्थापित करने होंगें और ऐसा तभी संभव है जब प्रत्येक मनुष्य एकात्म संबंध को जानेगा।

चूंकि दीनदयाल जी के जीवन पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव था इसलिए आप मानव को ब्रम्हा या प्रकृति का अंश मानते है।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone